भारत में तेजी से घटे एड्स मरीज

24.10 लाख से घटकर 21 लाख पहुंची एड्स मरीजों की संख्या, अमेरिकियों ने ईजाद किया इलाज का नया तरीका

पवन कुमार

नई दिल्ली। विश्व एड्स दिवस पर आपको बताने के लिए हमारे पास दो अच्छी खबरें हैं। पहली ये कि भारत में एड्स के मरीज अब कम हो रहे हैं वो भी थोड़ी बहुत संख्या में नहीं, तीन साल के भीतर मरीजों की संख्या में करीब तीन लाख की गिरावट आई है। दूसरी अच्छी खबर ये है कि एड्स के इलाज की पुख्ता तकनीक अमेरिकियों ने ईजाद कर ली है। उम्मीद रखें कि आने वाले वक्त में एड्स का डर भाग जाएगा। फिलहाल भारत ने एड्स से जंग में जो जीत हासिल की है उसकी बात करते हैं।

यहां मरीजों की संख्या को कम करने में सबसे बड़ा हाथ जागरूकता और बेहतर इलाज का है। इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च (आईसीएमआर) की संस्था इंस्टीट्यूट ऑफ साइटोलॉजी एंड प्रिवेंटिव ऑनकोलॉजी के निदेशक प्रोफेसर डॉक्टर रवि मेहरोत्रा ने बताया कि नेशनल एड्स कंट्रोल ऑर्गनाइजेशन (नाको) की ओर से चलाए जा रहे कार्यक्रमों की वजह से मरीजों की संख्या कम करने में मदद मिली है। वर्ष 2010 में मरीजों की संख्या 24.1 लाख थी, जबकि 2012 में यह संख्या 21 लाख रह गई। यह गिरावट उल्लेखनीय है।

डॉक्टर मेहरोत्रा ने बताया कि अमेरिका के ओरिगॉन नेशनल प्राइमेट रिसर्च सेंटर के वैज्ञानिकों ने इस बीमारी से बचाव और इलाज के नए तरीके की खोज का दावा किया है। अमेरिकी शोध सितंबर-2013 में एक प्रतिष्ठित हेल्थ जर्नल में छपा भी है। उनके दावे को खारिज नहीं किया जा सकता। फिलहाल इलाज के लिए जो तरीका अपनाया जाता है उसमें 20 तरह की दवाएं और थेरेपी उलब्ध है, लेकिन कई केसों में ये भी नाकाफी साबित होती है। लिहाजा आईसीएमआर भी इलाज के बेहतर और पुख्ता तौर-तरीकों की खोज की दिशा में तेजी से काम कर रहा है। उन्होंने कहा कि अमेरिकियों द्वारा बचाव के लिए जो तरीका खोजा गया है उससे न सिर्फ वायरस को फैलने से रोका जा सकेगा, बल्कि बीमारी होने के बाद भी कारगर बचाव संभव होगा।

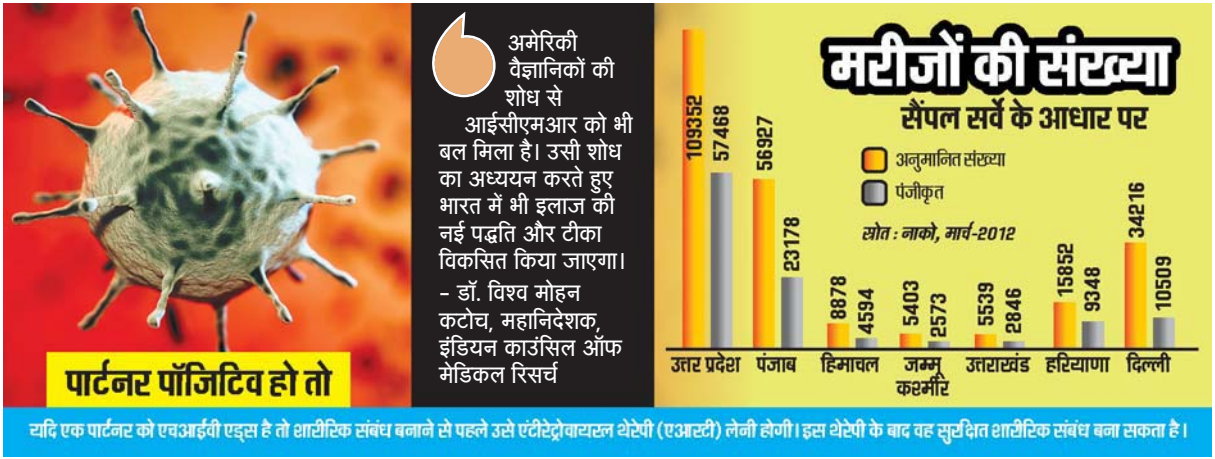

एचआईवी पॉजिटिव होने से कोई एड्स की श्रेणी में नहीं आता। इसके चार फेज हैं। तीसरे और चौथे फेज में आने के बाद ही व्यक्ति को एड्स का मरीज माना जाता है। डॉक्टरी भाषा में बताएं तो सीडी4 काउंट जब 350 से नीचे आ जाता है तो हम कहते हैं कि मरीज को एड्स हो गया है।

- डॉ. नचिकेता मोहंती, कंट्री प्रोग्राम मैनेजर, एड्स हेल्थकेयर फाउंडेशन